Chap-6

षष्ठम् अध्याय

शिवानी के उपन्यासों में भाषा शैली

1. भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम
2. भाषा का स्वरूप
3. शब्द संपदा
4. अन्य भाषा तथा बोलियों के शब्द
5. उपमान, रूपक, विशेषण, क्रिया, मुहावरे, प्रतीक
6. शैली

शिवानी के
उपन्यासों में भाषा शैली

भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम

''अनुभूति को अभिव्यक्ति देने के लिए जिस साधन का प्रयोग किया जाता है उसे भाषा कहते हैं।''[1] भाषा के माध्यम से व्यक्ति अपने भावों व विचारों को दूसरों को सम्प्रेषित करता है व दूसरों के भावों व विचारों को ग्रहण करता है। दूसरे शब्दों में भाषा ऐसे सार्थक शब्द समूहों का नाम है जो एक विशेष क्रम से व्यवस्थित होकर हमारे मन की बात दूसरे के मन तक पहुँचाने और उसके द्वारा उसे प्रभावित करने में समर्थ होते है। लेकिन साथ ही यह स्मरण रहे कि : ''भाषा साधन है, साध्य नहीं। अब हमारी भाषा ने वह रूप प्राप्त कर लिया है कि हम भाषा से आगे बढ़कर भाव की ओर ध्यान दें और इस पर विचार करें कि जिस उद्येश्य से यह निर्माण कार्य आरम्भ किया गया था, वह क्यों कर पूरा हो। वही भाषा जिसमें 'बागो बहारें' और 'बेताल पचीसी' ही सबसे बड़ी सेवा थी, अब वह इस योग्य हो गई है कि उसमें शास्त्र और विज्ञान के प्रश्नों की भी

1. साहित्यलोचन, 12 वाँ संस्करण - डॉ. श्याम सुन्दरमदास पृ-231

रचना की जा सके।''[1] अतः भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है, पर वह विकासनशील प्रक्रिया है परम्परा है, जिसके रूप में युग के अनुसार बदलाव आते रहते हैं।

भाषा का स्वरूप

भाषा व्यक्ति का मानस तो नहीं होती, लेकिन व्यक्ति की वास्तविकता और पहचान का आधार अवश्य होती है। फैलता हुआ परिवेश मान देने की प्रक्रिया मानव को शक्ति सम्पन्न और सजीव बनाती है। इसलिए भाषा का स्वरूप व्यक्ति के समूचे अस्तित्व में है।

प्रतीक शास्त्र के विद्वानों का मत है कि हम प्रकृति का सही आनन्द नहीं ले सकते, अगर हमें परिवेश में फँसे पेड़ पौधों का नाम ठीक से याद नहीं है, क्यों कि आनन्द स्वतः नहीं होता है। इसलिए भी भाषा की आवश्यकता पड़ती है। रचनाकार भाषा की इस शक्ति को भली-भाँति समझता है और भाषा की सीमा को भी मानता है इसलिए रचनाकार भाषा के माध्यम से भाषा में ही कुछ नया रूप और आकार पैदा करके अनुभव को, मनुष्य को मनुष्य के माध्यम से समझने में सहायक होता है। वस्तुतः भाषा एक ऐसा माध्यम है, जो निरन्तर प्रयुक्त होते रहने के कारण अर्थ की दृष्टि से तथ्य का या संरचना की रूप ले लेता है। उपन्यासकार इस सीमा से कभी तो लाभ उठाता है और कभी इस रूपाकार को तोड़ता भी है।

साहित्यिक भाषा लेखक की दृष्टि होती है, उसके भावों की, विचारों की, संवाहिका होती है। आवश्यक नहीं है भाषा कठिन ही हो वह सरल, सहज भी हो सकती है। श्री नरेश मेहता ने भाषा के स्वरूप के सम्बन्ध में कहा है,''भाषा,

---

1- उत्तरकथा (भाग दो) आमुख- नरेश मेहता

भाषा होती है-गद्य या पद्य नहीं और नहीं और न ही सरल या कठीन। रचना में अनन्तराशि भाषा का कोई अर्थ नहीं होता क्यों कि वहाँ प्रत्येक शब्द न केवल अपने को ही प्रतिष्ठित या व्यक्त करने के लिए होता है, बल्कि जो प्रस्तुत नहीं है, बल्की जिसमें प्रस्तुत किया जाना है-के लिए वह छोटी है।''[1]

भाषा का शाब्दिक अर्थ भाव प्रकट करने का साधन है; लेकिन भाषा अपने आप में महत्वपूर्ण नहीं होती, उसका महत्व तब तय होता है, जब वह भावनुकूल रूप धारण करती है और इससे भी अधिक उसका महत्व तब होता है जब लेखक की अभिव्यक्ति का विशेष अंग बन जाती है।

शब्द संपदा

सार्थक शब्दों के समूह को ही भाषा के रूप में माना गया है। शिवानी जी ने भी अपनी भाषा को सहज, स्वाभाविक और पात्रानुकूल बनाने के लिए अनेक प्रकार के शब्दों का प्रयोग किया है। उन्होंने भाषा सम्बन्धी प्रयोग जिस रूप में किए हैं, उस रूप में पाठकों को समझने में कहीं भी परेशानी नहीं होती और ये उनके उपन्यासों की सफलता का बड़ा कारण है। इनके उपन्यासों में बंगाली, संस्कृत और आंचलिक शब्दों की भरमार है, लेकिन इस पर भी इनकी भाषा बोझिल नहीं बनी है।

प्रत्येक क्षेत्र में जहाँ प्रशंसक है वहीं आलोचक भी है। शिवानी जी पर भी आलोचकों ने आरोप लगाया कि इनकी भाषा क्लिष्ट, संस्कृतनिष्ठ और बड़े वाक्य विन्यास वाली है, इस पर शिवानी जी ने बहुत स्पष्ट जवाब दिया, ''मैं शब्दकोश खोलकर नहीं लिखती। जो भाषा बोलती हूँ वैसा ही लिखती हूँ। उसे बदल नही सकती। फिर जब कठिन शब्द भावों को सन्प्रेषित करने में सक्षम होते हैं और

1- उत्तरकथा (भाग दो) का आमुख- नरेश मेहता

रचना का रसास्वादन करने में आनन्द की अनुभूति होती है, तब में नहीं समझती कि जान बूझकर सरल और अपेक्षाकृत कम प्रभावोत्पादक शब्दों का रखना कोई बुद्धिमत्ता है।''[1]

डॉ. भोलानाथ तिवारी ने लिखा है,''एक ध्वनि या एक से अधिक ध्वनियों से शब्द बनता है। शब्द अर्थ के स्तर पर भाषा की लघुतम इकाई है।''[2]

अतः शब्द भाषा की वह इकाई है, जो अर्थ की गरिमा से युक्त है। डॉ. खत्री और डॉ. चौहान के अनुसार, ''शब्द चयन तथा वाक्य विन्यास में भी लेखन तथा वक्ता को सतर्क रहना चाहिए। आलंकारिक, सुंदर, परिचित, अकृतिम तथा सरल शब्दावली का प्रयोग वांछनीय है।''[3] रचनाकार को उपन्यास में आये शब्दों पर विशेष ध्यान देना चाहिए क्योंकि ''अच्छा शब्द प्रयोक्ता ही सफल रचनाकार हो सकता है।''

शिवानी जी का कई भाषाओं पर पूर्ण अधिकार है, इसी वजह से उनका शब्द भण्डार काफी समृद्ध है और अपने उपन्यासों में उन्होंने अरबी, फारसी, अंग्रेजी, संस्कृत, बंगाली भाषा प्रयोग किया है। शिवानी जी इतनी भाषाओं के प्रयोग के बारे में बताती हैं कि ''ईश्वर की असीम अनुकम्पा से मुझे बचपन से ही कतिपय भाषाएँ सीखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मैंने बंगला, गुजराती, हिन्दी, संस्कृत, अंग्रजी में जो ग्रन्थ मौलिक रूप में पढ़े, उन्हे जब बाद में अनूदित रूप में पढ़ा तब स्वाभाविक था कि मुझे उसके अनुवाद फीके लगे और यदि आज मेरी कथा यात्रा वैविध्यपूर्ण रही तो उसका कारण भी संभवतः यही है कि मेरी

1- एक थी रामरती -शिवानी- पृ- 72

2- भाषा विज्ञान- भोलानाथ तिवारी- पृ-5

3- आलोचना का इतिहास- डॉ. एस पी खत्री एवं शिवदान सिंह चौहान-पृ-63

लेखनी को इन्हीं विविध भाषाओं के ज्ञान ने गतिशील बनाया।''

उनके उपन्यासों में शब्द संयोजन के सुंदर उदाहरण यत्र-तत्र बिखरे पड़े हैं जिनमें से सर्वाधिक चर्चित उपन्यास 'कृष्णकली' का उदाहरण प्रस्तुत है,''रात भर की दृष्टि के पश्चात् तीव्र हवा के तूफान ने धृष्ट बादलों को रूई की भाँति धुनकर पूरे आकाश में छितरा दिया था। गागर के शैल शिखर के पीछे अभी भी धुंधली तारे टिमटिमा रहे थे। भोर होने को थी।'' इस उदाहरण में क्रमबद्धता व शब्द संयोजन प्रशंसनीय तो है ही बल्कि हर शब्द अपने-अपने स्थान पर इस तरह जमा हुआ है कि एक का क्रम हटाने से या परिवर्तित कर देने से उसका स्वरूप बदल जायेगा।

संस्कृत शब्द –

शिवानीजी की भाषा में संस्कृत-बहुलता परिलक्षित होती है। उनके विशिष्ट उपन्यासों में से संस्कृत शब्दो को लिया गया है।

भैरवी –

शिला वृष्टि, पोषिता पत्नी, मरीचिका, द्विरागमन, हिमभूधर, दस्यु कन्या, अश्वत्थ, हास्योज्ज्वल, भवजलधिरत्न, आगत भर्त्तिका, प्राक्तन छात्र वैधत्यरिपु, महाकुत्सित कपाल कुण्डला।

माणिक –

आगंतुका, शिलोच्चय, पाटल-प्रसून, आवास-सज्ञा।

चौदह फेरे –

परिवेशन, अर्धमीलित नयन, लौह-स्तम्भ, निर्लज्ज दुराचारिणी, वज्रमूर्खा, जातिच्युत, उत्तुंग सौंध, अस्तप्राय, प्रत्यावर्तन, भ्रमरावलि।

कृष्णकली –

गगनचारिणी, अनुजवधू, दुर्दिनाभिसारिका, वीतयौवना, स्कृति-गह्वर, विवस्त्रावस्था, मृतवत्सा, महाकुत्सित, प्रासाद, दिवंगता।

तर्पण –

मुक्ताक्षर, ग्रामाकाश, पार्श्व-परिवर्तन, ताम्रतेज, निर्झरिणी।

विषकन्या –

सहोदरा, गल्प-गुच्छ, दिगदिगंत, अनभिज्ञ, ईर्ष्याग्नि

अतिथि –

अभिज्ञता, शयन कक्ष, औद्वत्य-रंग।

कहीं-कहीं लेखिका ने अतिप्रचलित स्वाभाविक शब्दों के स्थान पर उनके संस्कृत पर्यायों का प्रयोग अपनी भाषा में किया है।

इसी प्रकार शिवानी ने संस्कृत एवं अँग्रेजी शब्दों का संयोजन किया है। ''सिनिकल रूक्तित्व, दुतगामी स्पीड, एल्यूसिव व्यक्तित्व' आदि।

शिवानी जी की भाषा में संस्कृत शब्दों की बहुलता हमें आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, डॉ. भगवतीशरण मिश्र की तथा प्रसाद जी की गद्य शैली की स्मृति कराती है।

अरबी–फारसी तथा उर्दू के शब्द –

हमारे देश में काफी सालों तक मुसलमानो ने शासन किया था। इसी वजह से अरबी-फारसी तथा उर्दू के शब्द हमारी शब्द-संपदा में शामिल हो गये और वे शब्द हमारी रोजमर्रा की भाषा में इस कदर रच बस गये है कि हमें इस बात का अहसास ही नही हो पाता है कि ये शब्द हिन्दी के नही है। शिवानी ने भी अपने उपन्यासों में इन शब्दों का प्रयोग किया है।

तुनुकमिजाजी, उठावगीर, तेजतर्रार, बजाय, नौशा अकाया-बकाया, मनहूस, तफरी, चांदमारी, जचगी, तामचीनी, अतलसी कमीज़ मुआवजा, खरीद-फरोख्त, पेशवाज़, फूहड़, हिजड़ा, बदशक्ल, हमाम, किरिस्तान, बन्नेमियां, कैफियत, हम जुल्फ तनख्वाह, बदशक्ल आदि।

अंग्रेजी शब्द –

शिवानी जी ने अपने उपन्यासों में अँग्रेजी शब्दो का प्रयोग किया हैं और उसकी वजह है कि उनके उपन्यासों की नायिकाएं कान्वेण्ट स्कूलों में पढ़ी हैं। जैसे अहल्या, कली आदि की शिक्षा इन्हीं स्कूलों में हुई इसीलिए इन उपन्यासों में अंग्रेजी के शब्द भी बहुतायत रूप से मिलते है। कई उपन्यासों में तो शिवानी ने पूरे-के-पूरे वाक्यों या परिच्छेदों का वर्णन किया है। इनमें शिवानी के द्वारा दिये गये कुछ विशिष्ट अँगेजी शब्द है-

इजिटिशयन ममी, पिगस्टीकिंग पार्टी, ब्रिगेडियर, प्यूरिटन, विल यू प्लीज कीप क्वायेट, लोलिटा, पोस्टेड, सिंकिंग, कोर्टशिप, काकटेल, चॉइस, कोमन कर्टसी, टीन-एजर, फ्लाइंग किस, माईल-स्टोन, स्लीमिंग सेण्टर, नन्स, रीकूटमेण्ट सेन्टर, स्टेनो, ब्लौणड, रोप-ट्रीक डोक्युमेण्टरी, स्कैण्डल, आरफनेज, सण्डे स्पेशल, थ्री-इन-वन, वेरामून, विजिलेन्स कमीशन, एडिक्ट, डारमेटरी, इन्ट्युशन, क्रिम क्रेकर, आर्थराईटिस, केन्टोन्मेण्ट, स्वीज गवर्नेस, जस्ट ए टीनी वोनी फ्लैट, न्यू पिंच, डिप्लोमेट, स्प्रेवर्क, हँगरी, स्ट्रोबरी।

इस प्रकार शिवानी ने अँग्रेजी शब्दो का काफी मात्रा में प्रयोग किया है। इसके साथ ही उन्होंने हिन्दी शब्दों तथा प्रत्ययों के साथ अँग्रेजी शब्दों का सुन्दर तालमेल बिठाया है।

फैन्सिंग पैंतरेबाज, डिप्लोमेट आदमी, सिनिकल व्यक्तित्व, हिस्टिरिकल

आँखें, हिस्टिरिकल सपने। इन शब्दों के द्वारा शिवानी की यह प्रवृत्ति स्पष्ट रूप से लक्षित होती है।

अन्य भाषा तथा बोलियों के शब्दो –

शिवानी ने अपने उपन्यासों में पंजाबी, मराठी, बंगला, गुजराती आदि भाषाओं के शब्दों का इस्तेमाल किया है।

इसी प्रकार बोलियों में ब्रज, कुमाऊंनी अवधी आदि के शब्द पाये जाते है। कुमाऊंनी बोली के शब्दो की अधिकता का कारण पहाड़ी क्षेत्रो से सम्बन्ध है।

पंजाबी शब्द –

अपणा, हाय रब्बा, हाथी दा पैर, मैं की करां, कित्थे जावां आदि।

मराठी शब्द –

उटाला, शहाणा, शिवाई, सोन्याची, गोसावडे, नवरा, मुलगी आदि।

बंगला भाषा –

शिवानी का बंगला से विशेष सम्बन्ध व लगाव रहा है। उनके उपन्यासों के कई पात्र बंगला भाषी है। अतः बंगला के शब्द स्वाभाविक रूप से उनके उपन्यासों में पाये जाते है। कई स्थानों पर शिवानी ने बंगला के पूरे के पूरे वाक्यों का प्रयोग किया है। इस भाषा से सम्बन्धित शब्द जिन उपन्यासों में है वे है कृष्णवेणी, कालिन्दी, जोकर, चौदह फेरे, श्मशान चम्पा, कृष्णकली आदि। जामाई पेयेछी, गोजैन, आहा बूक जूडिये गैली मां लोक्खी, बांगला शीखते पारले ना, ब्राह्मोत्सव, माधोत्सव, खांटी बांगाली छेले जन्मे है तोमार मां, निमाई, जा खेयेछी, आमो एखोन तोर बंगलियाय गिये एकटू शोखो बूझली, गायेर लोक, माशी, नामेर, दीदीमनी लोक्खीटी।

गुजराती शब्द –

उनके उपन्यासों में गुजराती के शब्द भी बहुत मिलते है इसकी वजह है कि शिवानी का कुछ समय गुजरात मे भी बीता है। उनके घर में भी गुजराती साहित्य की काफी रचनाएँ रखी रहती थी क्यों कि उनकी माताजी गुजराती साहित्य की मर्मज्ञ थी।

'रतिविलाप' उपन्यास में तो शिवानी ने करसनदास भोगीदास कापड़िया नामक एक गुजराती व्यापारी ते चरित्र को उद्‌घाटित किया है। अतः इस उपन्यास में गुजराती शब्दो का काफी मात्रा में प्रयोग हुआ है।

छे, असाडनां नोरनां, वेतर, माडी, दाजी, खाटली, तपेली, भात, भरतार, छोकरी, साणसी, वेल आदि।

कुमाऊंनी बोली के शब्द –

शिवानी के उपन्यासों में कुमाऊं बोली के शब्द सबसे ज्यादा पाये जाते है। शिवानी की पात्र-सृष्टि में अधिकांश की नाल कुमाऊं में गिरी है।

गुंइयां, धुमारी, कंच, जनवासा, खुड़ शशुर, नौशा, गनेल, शकनि-आखर, संड-मुसंड, चेली, बगटूट, कोथाय, खैंपा; तुम्बी, नैडा, पणज्यू, थुल्मा, तितुर, भुरिया, लपटन, गैतबी, बांज, कच्छप, बुडज्यू, ज्योंला, फोटक, भनमजुवा, कलमटिया, नातक, छनचरिया, छाजा, बल्द, भांज आदि।

<u>तत्सम-तद्‌भव-देशज शब्द –</u>

तत्सम शब्द –

भारतीय भाषाओं का जन्म संस्कृत से हुआ है; अतः अधिकांश भारतीय आर्य भाषाओं में संस्कृत के शब्दों का आधिक्य पाया जाता है? इन शब्दों के कारण ही ये भाषाएं एक-दूसरें के करीब पाई जाती हैं। उदाहरणार्थ गुजराती और

हिन्दी में तथा मराठी और हिन्दी में ऐसे हजारों शब्द मिल जायेंगे जो मूलतः संस्कृत के होने के कारण समान हैं। ऐसं शब्दों को व्याकरण तथा भाषा-विज्ञान की दृष्टि से ''तत्सम'' कहा जाता है।

आसन्न-प्रसवा, निरामिष, पाण्डेसूता, नतमुखी, प्राक्तन छात्रा, गगनांगन, हरीतिमा, सद्यः विवाहित।

तद्‌भव शब्द –

तद्‌भव उन शब्दों को कहा जाता है जो संस्कृत या अन्य किसी भाषा अँग्रेजी या अरबी-फारसी से उद्‌भूत हुए हैं। साच्छात, परायागराज, भंवरा, जमाई, मसान भात, परेत, अलच्छनी।

शिवानी की भाषा में सहृदय पाठक काव्य सौन्दर्य का आनंद भी प्राप्त करते है। शिवानी ने अपने उपन्यासों में नये उपमान, नये रूपक, नये विशेषण, क्रियाओं के नये रूप; नवीन मुहावरों, नवीन प्रतिकों आदि को अपने साहित्य में स्थान दिया है। इसके कारण शिवानी की भाषा में नवीन अभिव्यंजना की सृष्टि होती है।

नये उपमान –

<u>**कृष्णकली**</u>

1. बादल - धूनी हुई रूई - पृ. 8
2. बोली - भाषा की सरस्वती- पृ. 16
3. बड़ी दी का क्रोध - पहाड़ी कोहरा - पृ. 27
4. सब्जियों का मटमैला सूप-किसी की धोती को धोकर लाया गया पानी पृ. 94
5. हिप्पी - शिव की बारात के गण - पृ. 138
6. कुन्नी का दैह - फुटबाल का ब्लैडर - पृ. 157

चौदह फेरे

1. नंदी - परिवार के विशाल जहाज की खलासी - पृ. 6

2. कर्नल - कुमाऊं के आगाखान - पृ. 2

3. वासना - विकार का सर्प - पृ. 38

4. कमरे में सहसा स्तब्धता छा जाना - नेफा की रणभूमि की नीरवता छा जाना - पृ. 72

5. पैरो की सफेद युगल टखनियां - बताशे - पृ. 83

6. कान्वेण्ट स्कूल की छोटी बच्चीयां - हंसती - खिलखिलाती नन्हीं गिलहरियां - पृ.191

कालिन्दी

1. विदेशी मेम - लम्बे खजूर का फल - पृ. 106

2. पहाड़ी लड़के - बालशिंगाड़ी मिठाई - पृ. 151

3. उल्लू - दुर्दान्त पाहुना - पृ. 29

4. कालिन्दी का सौन्दर्य - अमृतवृद्धि करता शरद-पूर्णिमा का चन्द्र - पृ, 220

विषकन्या

1. नैनिताल की संध्या - उष्ण जलवायु में जनमी-पली किशोरी का यौवन - पृ. 26

2. आकाश - विपत्तिकाल का मित्र - पृ. 55

3. विषबुझी दृष्टि - शत्रुपक्ष का शक्तिशाली टारपीडो - पृ. 30

4. दीदी का हिसाब - शत्रुपक्ष की इनफैंट्री के सधे निशाने बाज गनर्स बने घातक बम - गोले - पृ. 45

भैरवी

1. काली कोठरी - मालगाड़ी के बन्द डिब्बे-सी संकरी गुफा - पृ. 6
2. मायादीदी का स्वर - पुरुष कंठ-स्वर की वज्रहुंकार - पृ. 15
3. राजराजेश्वरी - विसर्जन के लिए डोले में ले जाई जा रही नंदादेवी की प्रतिमा - पृ. 39
4. मां की धमकी - रेत में पड़ी पानी की बूंद - पृ. 41
5. वर्षो की भूली - बिसरी स्मृतियाँ - कण्ठ में अटकी कुनैन की गोलियां - पृ. 57

नये रूपक -

कृष्णकली

1. उच्च नौकरी का राज सिंहासन - कृष्णकली - पृ. 125
2. पिता के वैभव की बैसाखियां - वही - पृ. 133
3. मनहूस चुप्पी की हिमशिला - वही- पृ. 168
4. कैशोर्य की मरीचिका - वही - पृ. 200

श्मशान चम्पा

1. विपत्ति का मेघखण्ड : पृ. 8
2. तिमिर का धूमिल आवरण : पृ. 15
3. अविश्वास की आरी : पृ. 24
4. कैशोर्य की लुनाई : पृ. 82
5. गालियों का गुलदस्ता : पृ. 114

भैरवी

1. विवशता की सिसकी - पृ. 6

2. मनोबल की बैसारिवयां - पृ.13

3. वैराग्य का तहरवाना - पृ. 16

4. महाप्रस्थान की राही चूनर - पृ. 27

5. कलंक-कथा का अभिशप्त - पृ. 48

6. गृहस्थी का पाग - पृ. 55

7. वयस का माइलस्टोन - पृ. 62

8. शंका का भूत - पृ. 78

9. विवेक का तराजू - पृ. 91

10. आदेश का चाबुक - पृ. 112

11. अव्यक्त छंद की प्रसव वेदना -पृ.97

चौदह फेरे

1. संयम की शिला से विवेक के स्तंभ का ढह जाना - पृ. 2

2. विवेक की लगाम - पृ. 5

3. प्रश्न का करारा चांटा - पृ. 54

4. अधैर्य की सीटिया - पृ. 143

5. उत्कोच का दरिया - पृ. 167

6. लजीली पलकों का शासन - पृ.191

7. भाग्य के घोड़े की बागडोर संभालना - पृ. 207

कृष्णवेणी

1. भीड़ का चक्रव्यूह - पृ. 8

2. फटकार का चाबुक - पृ. 31

3. बातों के लच्छे - पृ. 32

4. धोबी घाट का विशाल उदधि - पृ. 45

विषकन्या

1. गांभीर्य की लक्ष्मण रेखा - पृ. 13

2. काल्पनिक भोग का आनंद - पृ. 14

3. ईर्ष्या का अंकुर - पृ. 22

4. कनखियों के कपाटों की दरार - पृ. 28

5. स्वागत का मदमाता जाम - पृ. 39

6. मधुर आह्वान का इन्द्रजाल - पृ. 51

7. वेदना का ज्वार-भाटा - पृ. 55

मायापुरी

1. मृत्यु का वज्रपात - पृ. 7

2. कल्पना के पर्दे - पृ. 31

3. नियति का अट्टहास - पृ. 40

4. विपत्ति के घनघोर बादल - पृ. 60

5. संदेह का मेघ - पृ. 80

6. विश्वासघात का गुरूत्तर बोझा - पृ. 130

7. विऽम्बना का अट्टहास - पृ. 160

कालिन्दी

1. रूलाई का अटका गह्वर - पृ. 25

2. नगण्य विभाग का अंधाकुआ - पृ 34

3. बाप के बैंक का सौन्दर्य - पृ90

4. चुप्पी का अलीगढ़ी ताला - पृ. 124

5. धनागम की खुशबू - पृ. 146

6. बचपन की देहरी - पृ. 173

7. गृहस्थी का भग्न खण्डहर - पृ. 210

<u>सुरंगमा</u>

1. कुतूहल की सहस्त किरणें - पृ. 6

2. वयस की मरीचिका - पृ. 7

3. पलायन की चादर - पृ. 18

4. चुप्पी का बादल - पृ. 36

5. हंसी का धन्यवाद - पृ. 45

नये विशेषण -

साडी मण्डिता भव्यमूर्ति, व्याघ्र दृष्टि, नम्र प्रणयी, दक्ष कलाइयां, भीमकाय भैसें, कर्णचुम्बी आँखें, अवांछित कौमार्य, मुखरा सड़क, मूक कटाक्ष, क्यूपिड अधर, आसन्नप्राय मृत्यु, दुधिया बचपन-सी मिठास, आहत गिली दृष्टि, इजिप्शियन सुंदरी, अभेद चुप्पी, वैदुर्यमणि-सी नीली आंखे, निराभरण तापसी जननी, भीनी-सी झिड़की, निर्मल हास्यधारा, तन्वी किशोरी, पहाड़ सी छातियां, राजसी बरसाती, अनुभवी जिह्वा, रिकेटी सींक-सा छोकरा, पीताभ दमक, शांत-संयत तेजस्विता, धूर्त श्रृगाली पुतलियां, पुष्यतोया भागीरथी, अदृश्य आघात, रेशमी पक्ष्म, भूवनमोहिनी-भूभंगिया, तिर्यक दृष्टि, निशाचरी मुखौटा, यूनानी नाक, सर्पिल मोड़, परकटी तितली-सी निष्प्राण, गुदबदा शिशु, यौनताहीन आलिंगन, दीर्धागी गोरवर्णी युवती, बूमरेंगी तेजी, वार्ध्यक्य जर्जरित हृदय, ओछन-पोछन बिटिया, दाड़िमदशना दिव्य छटा, आपादमस्तक परिवर्तित रूप, रतनारी एड़ियां, उर्ध्वमुखी धूम्ररेखा, जीवन-उपन्यास की धारावाहिक रोचक

किस्त, किशोरी के-से कमनीय कपोल, निद्रामग्रा उर्वशी, तृषा क्रान्त प्रेत, मरणोन्मुखी-उड़ान, सुर्य की प्रौढ़ लालिमा, मेहराबदार दरवाजे, उज्ज्वल सुंदरी हंसी, वयः जर्जर हाथ, श्रृंगारमग्रा अभिसारिका, हीम-शीतल निस्तब्धता, निर्लज्ज लपलपाहट, सील्ड निष्प्राण-देह, मृणाल-दण्ड से बाहू, मिश्री-घुले कंठ-स्वर, आनंदमयी सदाचारी आत्मा, मोतिया अक्षर, चम्पक उंगलियो का स्पर्श, रसीले ओष्ठ, कर्कशा बुढ़िया, गलियों का मौलिक कोश, मौन प्रणय निवेदन, कर्णचुम्बी लालिमा, अस्वाभाविक गांभीर्य, अभिजात उदार चेत्ता मार्जित रूचि के पुरूष, कस्तुरी पुष्टिका, अनारदानी-हंसी, स्निग्ध हंसी, गंधमादन पर्वत-सी देह, अपार्थिव तेज, बलवीर्य मदोद्धत असुर, गरिष्ठ संगीत, सतर उठान, देवदत्त प्रतिभा, अनाम प्रेमपत्रों की अस्वाभाविक दृष्टि, काली भुजंग संतान, आबनुसी चेहरा, शांत निरूद्वेग दृष्टि।

सूक्तियाँ

1. धन्य है हिन्दू जाति जो मरे को भी पानी देती है।
2. उत्कोच से सयानों को ही नही नन्हे सरल बच्चों को और भी सुगमता से लपेटा जा सकता है।
3. एक सुदर्शन पुरूष दूसरे सुदर्शन पुरूष को प्रशंसा का अर्घ्य दे सकता है, किन्तु सुंदर नारी कभी दूसरी नारी के सौन्दर्य की महता स्वीकार करने को तत्पर नहीं होती है।
4. जिसका बड़ा बेटा बिगड़ता है, उसका कुटुंब ही फिर नष्ट हो जाता है।
5. अपना बच्चा तो बंदरिया को भी विधाता की सर्वश्रेष्ठ कृति लगता है।
6. मरद का मन, चाहे वह लाख साधे, औकात में होता है, एकदम देशी कुत्ता। सामने हड्डी रख दो, तो कितना ही सिखाया-पढ़ाया हो कभी लार

टपकायं बिना नहीं रह सकता।

7. मृत्युशैया पर पड़ा आदमी अन्याय करने की कोशीश भी करे, तो उसकी अंतरात्मा हाथ पकड़कर उसे रोक ही लेती है।
8. नारी और जल की तृषा जब कभी घातक रूप से तीव्र हो उठती है, तो उसे बुझाने के लिए मनुष्य जघन्य से जघन्य अपराध भी कर सकता हैं।
9. लगाम जितनी ही खींची जाये, घोड़ा उतना ही तेज़ भागता है।
10. घोड़ोको समझने के लिए स्वयं अपना निजी अस्तबल होना उतना ही जरूरी है जितना अच्छे साहित्य की जानकारी के लिए अपनी निजी; एक अच्छी लायब्रेरी।

कहावत

कृष्णकली

1. रानी रूठेगी अपना सोहाग लेगी। पृ.7
2. स्वयं फोड़ा फूट रहा है, तो उसमें चीरा लगाकर क्या करोगे। पृ. 64
3. आप मगन्ते बामना द्वार खड़े जजमान। पृ. 117
4. चित्त भी अपनी और पट भी अपनी। पृ. 114

भैरवी

1. जिसके न सबंधी गांजे की कली, उस लड़के से लड़की भली। पृ. 34
2. विनाशकाले विपरीत बुद्धि। पृ. 40
3. कटोरे पे कटोरा, बेटा बाप से भी गोरा। पृ.61
4. इसे कहते हैं जिस थाली में खाना उसी में छेद करना। पृ. 107

चौदह फेरे

1. गोकुल की बेटी मथुरा ब्याही। पृ. 68

2. दूध का जला छाछ भी फूंक-फूंक कर पीवै है। पृ. 71

3. औरत को न दिखाने बाज़ार और मर्द को न दिखावे भण्डार। पृ. 176

4. मरा हाथी भी नौ लाख का होता है। पृ. 207

श्मशान चम्पा

1. पांचो ऊंगलियां घी में है। पृ. 14

2. मैं तक मैत, भै तक दैज। पृ. 39

3. अपनी पुत्री और दूसरे की पत्नी सबको अच्छी लगती है।

कालिन्दी

1. मुँह में राम और बगल में छूरी। पृ. 11

2. सौत तो चून की भी बुरी। पृ. 34

3. न मुंह में दांत न पेट में आंत। पृ. 56

4. जैसे सांपनाथ वैसे नागनाथ। पृ. 67

5. सौ नूर कपड़ा एक नूर आदमी। पृ. 122

मुहावरे

चौदह फेरे

गले में ढोल लटका कर भाग जाना, दाल भात में मूसरचंद बनना, वह फिर मचमचाने लगी, अधरों पर सील लगाना, कलेजा मुँह को आना, छुट्टी की छुट्टी कर देना, छाती पर मूंग दलना, नयनों का वैभव धुंधला पड़ना, कद्दू में तीर मारना, थुड़ी-थुड़ीं होना, हृदय का बल्लियों उछलना, गू ढकना, आँखों में होली का अबीर-गुलाल छलकना।

भैरवी

बाघ मारना, तिस पर सवा सत्यानाश यह कि चौदहवें में कदम रखा था कि

चौबीस की लगने लगी, पैरों में लोहे की बेड़ियां डाल देना, पांडवों के बीच द्रौपदी बनना, गैंड़े की खाल होना, टेढ़ी खीर होना, आकाश में उड़ना।

मायापुरी

माथे पर पसीना झलकना, सिर पर पैर रखकर भागना, मुँह पर स्याही पूत जाना, यौवन की बाजी हार जाना, लहू का घूंट पीना, तिल का ताड़ बनाना।

कालिन्दी

पत्थर का कलेजा होना, भीगी बिल्ली बन जाना, मूंछों में मलाई लगाना, दीया बालकर चीज ढूढना, खबर का हवा-सा फैल जाना; नींद हराम कर देना, आंखो ही आंखो में पीना, पान के पत्ते सा फेरना आग में घी पड़ जाना, थूकने भी न जाना, खुली किताब सा बांच जाना, भद्रा उतारना, कलेजा पर केवटा सांप लौट जाना, तीन कौड़ी का होना, शिखा में गांठ लगाना।

कृष्णवेणी

अद्भूत व्यक्तित्व का सिक्का जमा देना, उत्साह पर झाड़ू फेर देना।

विषकन्या

कपोल-कल्पनाओं का बाजार गर्म होना, मज्ञा का दग्ध हो उठना, काल्पनिक कन्यादान कर गंगा नहा लेना, सुप्त चेतना का आंखे मलकर उठ बैठना, मिट्टी की मूरत बन जाना, क्या मुझे हड़के कुत्ते ने काटा है।

माणिक

दुहरा हो जाना, कठोर हृदय को नवनीत-सा पिघलना, हंसी का होंठो पर ही सूख जाना, गला काटना।

सुरंगमा

नम्रता से दुहरा हो जाना, पैसा पानी की तरह बहाना, प्राण ललकना, मक्खन

लगाना।

शैली

शिल्प में शैली का अपना असाधारण महत्व होता है। आचार्य वामन के अनुसार, ''शैली रीति के रूप में विशिष्ट पद रचना होती है।''[1]

''पाश्चात्य समीक्षक शैली को लेखक की भावाभिव्यक्ति की विशिष्ट पद्धति मानते है।''[2]

कुछ ने शैली का अर्थ विचार क्रम और गति माना है अर्थात् लेखक जिस गीत में विवेच्य वस्तु का परिचय देता है और जिस क्रम में योजना करता है उसे शैली कहते है।

इसी तरह कहा जा सकता है कि शैली काम को करने की विधि, रीति या पद्धति है और इसका सम्बन्ध भाषा से है क्योंकि भाषा का सुनियोजित रूप ही शैली का आधार है। भारतीय मनीषियों ने बुद्धि; कल्पना और भाव तत्व के साथ-साथ शैली तत्व को भी महत्ता प्रदान की है। शब्द योजना, वाक्यांशो का प्रयोग और वाक्यों का गठन शैली के उपकरण स्वीकार किए जा सकते हैं। साधारण रूप से शैली लेखक के हृदय का अनुभूति से लेकर पाठक की अनुभूति तक की प्रक्रिया से सम्बन्धित है। इसका प्रयोग वस्तु और अभिव्यक्ति दोनों के लिए होता है। यह कभी स्थिर नहीं रहा। यह क्रम अब भी गतिशील है और आगे भी इसी प्रकार रहेगा।

शैली के गुण

''शैली का सम्बन्ध कृतिकार के व्यक्तित्व के साथ-साथ भावाभिव्यंजना एवं भाषा के विशिष्ट स्वरूप से है। जिस प्रकार प्रत्येक रचनाकार का अपना स्वयं

1- काव्यालंकार सूत्र- आचार्य वामन

2- द प्राब्लम आफ स्टाईल - जे मिडल्टन मूरे -2/2/7-8 - पृ-8

का व्यक्तित्व होता है। सी प्रकार उसकी एक विशिष्ट शैली होती है। अतएव कृति का पूर्ण प्रभावान्विति के लिए शैली का प्रभावोत्पादक एवं आकर्षक होना अत्यन्त आवश्यक है। उसमें हास्य-व्यंग्य, वक्रोक्ति तथा आक्रोश का भी अद्‌भुत समन्वय होना चाहिए।''[1] ताकि ''भाषा शैली के शुद्ध सरल, रूढोक्ति सिद्ध और प्रभावशील होने से पाठक कथा के साथ-साथ भाषा का भी रस लेता चले।''[2] इस प्रकार किसी भी कृतिकार की शैली का मूल्यांकन करते समय यह देखना आवश्यक है कि उसकी कथन भंगिमा कितनी रोचक, प्रभावपूर्ण, सरल सहज और औत्सुक्यपूर्ण है।

शिवानी के उपन्यासों में शैली का वर्गीकरण

नया प्रयोग अपनी सार्थकता व्यक्त करने पर ही माननीय है, नवीनता के नाम पर क्लिष्टता का प्रयोग पाठकों की रूचि भंग कर लेता है। जैसा कि डॉ. त्रिभुवन सिंह ने कहा है, ''आज का कथाकथित रचनाकार इस बात का प्रचार करता है कि उसने लेखक और पाठक के बीच कोई अन्तराल नहीं रहने दिया है और वह पाठक के अधिकाधिक निकट होता जा रहा है, पर वस्तुस्थिति इससे सर्वथा भिन्न है। कविता के समान उपन्यास के क्षेत्र में भी कलाबाजियाँ दिखाने में व्यक्त कतिपय कृतिकार इस बात से फूले नहीं समाते कि उनका कहा कोई नहीं समझ पाता।''[1]

शिवानी जी का अपनी भाषा पर यथेष्ट अधिकार है और वे अपने हृदय के भावों को इसके द्वारा इतनी सहजता से अभिव्यक्ति देती है कि पाठक विषय वस्तु के साथ-साथ चल देता है।

शिवानी जी की गणना एक अच्छे शैलीकार के रूप में होती है। उनके उपन्यासों को समग्रतः पढ़ने के बाद उनके उपन्योसों में हमें निम्न भाषा शैलियों

1- हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद- डॉ.त्रिभुवन सिंह-शिवानी- पृ-666-667

के दर्शन होते है।

1. उक्ति वैचित्र्य व मुहावरे युक्त भाषा शैली -

इस तरह की शैली का प्रयोग करने से भाषा साहित्यिक हिन्दी के निकटतम तो पहुँचती ही है, साथ ही पाठक के निकट भी पहुँच जाती है पाठक ऐसी भाषा में डूब जाता है। कुछ उदाहरण द्रष्टव्य है-''अब आप लोग इतने सालों में मिले है। दालभात में मूसरचन्द नहीं बनूंगी; चल दिया जाये।''[1]

''पर इतनी बात याद रखना; चम्पा; पहाड़ की एक-एक कहावत सवा-सवा लाथ की होती है। कहते है न 'मैं तक मैत भै तक दैज'। जब तक माँ है तब तक मायका है और जब तक भाई है तब तक दहेज।''[2]

''आप भी, पापा, बच्चों की सी बातें करते हैं। भला इस सड़ी सी बाजार में आपको क्या मिलेगा? उलटे बाँस बरेली को! जा रहे हैं आप कलकत्त और शापिंग करेंगे अल्मोड़ा में।'' [3]

किसी कायस्थ ने अपनी जननी से कहा था-''तू क्या सोचती है, मैं तेरे गर्भ में था मैं ने तेरी आंतें इसलिए नहीं खाई कि तू मेरी माँ है? मैंने तेरी आंतें इसलिए नहीं खाई कि मेरे मुँह में 'दाँत नहीं थे।''[4]

''जन्म से क्षुधातुरा मेरी सखी को छप्पन व्यंजनों का थाल मिला भी तो पहला कौर मुँह में धरते ही विधाता ने छीन लिया।''[5]

2. आत्म कथात्मक शैली -

इस शैली के अंतर्गत पात्र अपनी कथा प्रस्तुत करता है। ऐसी शैली में

1- कृष्णकली-शिवानी- पृ- 59
2- श्मशान चम्पा- शिवानी- पृ-39
3- चौदह फेरे- शिवानी- पृ- 114
4- अतिथि- शिवावी- पृ-10
5- उपप्रेती -शिवानी- पृ-16

पात्र के मानसिक अन्र्द्वन्द्व और मानसिक आह्लाद दोनों की ही अभिव्यक्ति होती है। यह शैली आत्म विश्लेषणात्मक शैली से मिलती जुलती है।

शिवानी जी ने इस शैली का प्रयोग 'रति विलाप', 'उपप्रेती', 'कैंजा', 'रश्या', 'विषकन्या', में किया है।

रति विलाप में 'अनुसूया पटेल ने मुझे अपनी विचित्र कहानी सुनायी थी।'

''पिता की मृत्यु के पश्चात् उसने मामा की सहायता से अपना कारोबार संभाल लिया किन्तु व्यवहार कुशल संसारी मामा ने भानजी की समृद्धि से नहर काट अपनी बगीया सींचने में भी कम तत्परता नहीं दिखाई। अनुसूया कुछ-कुछ समझने लगी थी कि मामा ने उसका विवाह अपने एक समृद्ध मित्र के अकर्मण्य पुत्र से कर दिया । कुटिल मामा ने विवाह से पूर्व उसे उसके भावी पति की एक झलक दिखाकर ही मुग्ध कर दिया था। तब वह क्या जानती थी कि देखने में किसी ग्रीक देवता सा ही वह सुदर्शन तरूण विवाह की पहली रात्रि को ही अपने उन्मत्त अट्टहास और उससे भी अधिक उन्मत्त व्यवहार से उसे सहमाकर जीवन भर के लिए पुरूषमात्र के लिए पत्थर बनाकर छोड़ जाएगा।''[1]

उपप्रेती भी उपन्यास में अपनी कथा कहता है-''फिर एक लम्बी कहानी है, मैडम, मेरे संघर्ष की, मेरे अंतर्द्वन्द्व की, मेरे विनिपात की, मै क्या जानता था कि दुर बैठी आदर्शी नियति ठीक मेरी छाती पर अपना अचूक निशाना साध रही है ?''[2]

मैं आपको अपनी कहानी सुना लूँ। बहुत दिनों से आपकी कहानियों का आनन्द उठा रही हूँ-इस बार पाठिका को भी अवसर दीजिए ना।''[3]

1- रतिविलाप- शिवानी- पृ-10

2- उपप्रेती -शिवानी- पृ-27

3- विषकन्या- शिवानी- पृ-18

3. दृश्य विधान शैली -

उपन्यास पढ़ते समय जब ऐसा लगने लगे कि हम उपन्यास पढ़ नहीं रहे बल्कि किसी नाटक की मंच सज्जा के समक्ष हैं तब उपन्यास में प्रयुक्त शैली दृश्य विधान शैली कहलाती है।

शिवानी जी के लगभग सभी उपन्यास इस शैली के अन्तर्गत आते है,-

''कण्ठ में झूलती चवन्नी की तुलसी माला, खुले गीले बालों से टप-टप कर टपकता पानी, दो कर्ण चुम्बी आँखों के बिच सुभग नासिका से प्रशस्त चिकने ललाट तक खिंचा वैष्णवी त्रिपुण्ड। क्या रसशास्त्र के पृष्ठ यहीं साकार नहीं हो गये थे।''[1]

''सिढ़ियाँ पार करके दोनों गोल कमरे में पहूँचे। गहरे लाल पर्दोसे ढके कमरे में, बड़ी-बड़ी रानी एलिजा बेथ के जमाने की कुर्सियों पर गुदगुदे चीनी कुशन रखे थे। सोफे पर एक छोटा झबरा कुत्ता सो रहा था। दीवार पर पाश्चात्य शैली में अंकित कर एक नग्न सुडौल वक्षस्थल को ढंकने का प्रयत्न कर रही थी। चित्र इतना सुन्दर था कि शोभा मुग्ध होकर उसे निहारने लगी।''[2]

''क्योंकि उसके दोनों हाथों की अंगुलियाँ झडकर दो अधूरी मुट्ठियाँ मात्र रह गई है, होठ विहीन उसका चेहरा वीभत्स बन गया है, जैसे कटहल का छिलका। नाक नहीं है, पलकहीन अंगारे सी दो आँखे ही बस दप-दपकर जल रही है, पूरे चेहरे में।''[3]

4. पत्रत्मक शैली -

उपन्यास में आये हुए पत्र उपन्यास में पत्रीय शैली होने को दर्शाते हैं।

1- कृष्णकली- शिवानी- पृ -100

2- मायापुरी शिवानी- पृ -115

3- कृष्णवेणी- शिवानी- पृ-38

ऐसे पत्र कथा विकास में विषयान्तर भी कर देते है और कुछ स्थलों पर कथानक की स्वाभाविकता को बढ़ा देते हैं।

'कृष्णकली' इस शैली के प्रयोग के अन्तर्गत कई पत्रों का प्रयोग शिवानी ने किया है-

''पर मैं अपना वायदा नहीं भूली हूँ। मैंने तुमसे इसे केवल एक वर्ष पालने का अनुरोध किया था.... पर हो सकता है पन्ना, तुम्हें इस छोटी सी अवधि में इस अभागी के लिए ऐसा मोह हो गया हो, जिसका बंधन अब उन्हें दिन प्रतिदिन बाँधता जा रहा हो, यदि ऐसा है तो मेरी डार्लिंग पन्ना, ईश्वर के दिये इस उपहार को तुम मेरे अभिनन्दन सहित स्वीकार करो।

तुम्हारी,

रोज़ी

मदर रेवरेण्ड ने रोजी को एक लम्बी चिट्ठी लिख भेजी थी-

''यह तुम्हारी वार्ड न होती, तो मैंने इसको कब का हटा दिया होता। लड़की की बनने संवरने में जितनीरूचि है, उसकी आधी भी यदि पढ़ने में होती, तो यह हमारे कान्वेन्ट का नाम उज्वल करती।..... चाहने पर भी उसे खींचकर न तुम इसे अनुशासन में बाँध सकती हो न मैं और न इसकी माँ। इस वर्ष मेरा कठिन दायित्व तुम्हारे और इसकी माँ के कन्धों पर पड़ रहा है, ईश्वर तुम्हें धैर्य और इसे सद्बुद्धि दे।

रेवैरेण्ड मदर''[1]

कृष्णकली प्रवीर को पत्र लिखती है -

''के!

1- कृष्णकली- शिवानी- पृ-206-208

तुमने काबुल छोड़ दिया है ना, इसी से लम्बा नाम अब मैंने छोटा बना लिया है।......

मैं जानती हूँ तुम आओगे, क्यों कि बीच-बीच में मुझे लगता है, मैं एक बार फिर अपने अरण्यक पहुँच गयी। मेरा सिर तुम्हारे घुटने पर टिका है और मेरे सिर पर धरा तुम्हारा हाथ काँपने लगा है।

प्रयाग स्टेशन पर उतरना, जंक्शन पर नहीं और फिर किसी भी रिक्शावाले से कहना तुम्हें ईसाई टोले की मोटी मेम के यहाँ जाना है। तुम्हें पहुँचा देंगे।''

लम्बी चिट्ठी के अन्त में किसी का नाम नहीं था।''[1]

'स्वयंसिद्धा' में माधवी के पिता पत्र लिखते हैं-

''माधवी,

तुमसे कुछ कहने का अधिकार नहीं रहा। फिर भी, कर्तव्यवश, आज तुम्हें लिखना जरूरी हो गया। मैंने तुम्हारा कन्यादान किया था। तुम्हारे उस श्लोक की आकृति का साक्षी मैं भी हूँ, आर्ते आर्ता भविष्यामी सुखदुःखानुगामिनी।'' आज कौस्तुभ मृत्युशय्या पर है। इसी से तुम्हारे कर्तव्य से, तुम्हें अवगत कराना अपना भी कर्तव्य समझता हूँ।

शिवदत्त''

माधवी के जीवन को तबाह करने वाला झुठा पत्र इस तरह से था-

''बड़ी भुल कर रही हो माधवी जिसकी सोने की काया पर रीझ, दुल्हन बनी उतावली डगे भरती जा रही हो, वह काया तुम्हें कभी सपने में भी नसीब न हो, इसका मैंने टोना टोटका, अनुष्ठान सब कुछ किया है। माधवी! अपने रूप के मद में मत रहना, उससे भी अधिक घातक रूप की वारुणी पिलाकर मैं तुम्हारे

1- स्वयंसिद्ध- शिवानी- पृ-10

पति को बहुत पहले ही मदालस बना चुकी हूँ।

तुम्हारी ही, राधिका''[1]

इस उपन्यास का अंत भी पत्र से होता है–

''पिताजी,

आपके आदेश का पालन कर सप्तपदी के उस पावन श्लोक की महिमा अक्षुष्ण रखकर जा रही हूँ। जानती हूँ, मेरा अपराध आपकी दृष्टि में ही नहीं स्वयं मेरी अपनी दृष्टि में भी अक्षम्य था किन्तु क्या मेरा यह पश्चाताप उस कलुष का स्वयं प्रक्षालित नहीं करने देगा? वहाँ जाकर कम से कम, उस अदालत में तो सिर उठाकर कह ही सकूंगी -

अति आर्ता भविष्यामि

सुखदुःखानुगामिनी।

आपकी

माधवी''[2]

लापता बसंती पत्र के माध्यम से उपन्यास को नवीन मोड़ देती है –

मेरी प्यार बुबू,

बंसुली का पायलागन। तेरे आशीर्वाद से मैं पढ़ लिखकर बहुत बड़ी नौकरी पा गई हूँ। मोटर नौकर, रसोइया सब कुछ है, पर अभी रमते जोगी और साँप की तरह मेरा भी कोई घर नहीं बन पाया है। तुझे रूपया भेज रही हूँ। एक पार्सल भी भेजा है। गाँव में सबसे मेरा पायलागन कहना।

तेरी - बसंती''[3]

1- स्वयंसद्धा- शिवानी- पृ- 13

2- स्वयंसिद्धा- शिवानी - पृ-29

3- रथ्या - शिवानी - पृ. 21

5. वर्णनात्मक शैली –

इसे अन्य पुरूष शैली भी कहते है। इस तरह की शैली का प्रयोग करते समय उपन्यासकार तटस्थ दृष्टा की भाँति विषय का वर्णन करता चला जाता है। यह शैली अन्य शैलियों की अपेक्षा सरल और सुबोध होती है।

शिवानी ने अपने उपन्यासों में इस शैली का जमकर प्रयोग किया है। कुछ उदाहरण द्रष्टव्य है -

''कुमायूं के नरभक्षियों को पिस्सुओ की भाँति मसलने वाले प्रख्यात शिकारी कोरबेट का बनाया वह बंगला उसी के दुस्साहसी व्यक्तित्व का आवास बनने के उपयुक्त था। संध्या होते ही वहाँ सियारों की पूरी बिरादरी जुट जाती। पहाड़ में मोटे अजदहे नहीं होते, यही रोजी सुनती आयी थी। पर एक दिन वह पन्ना के साथ टहलने निकली तो रोडीडेण्ट्रान के मोटे तने से लिपटे विकराल पायजन को देखकर थर-थर काँपने लगी थी।''[1]

''हटी भरी वाटिका सहसा ऐसे उजड़ जायेगी, यह कभी किसी ने नहीं सोचा था। दूर से ही पाटल प्रसूनों की सुगंध राह चलने को भी मोहकर, पल भर को ठिठका देती थी, उसी की सूखी झाड़ियों के झंखाड़ पर धूल उड़ रही थी। पीतल की कील ठुके किसी प्राचीन दुर्गद्धार से गेट पर ताला लटका था। बरामदे में रखे कोटन के गमलों पर लगी धूल की मोटी परत परताला लटका था। बरामदे में रखें कोटन के गमलों पर लगी धूल की मोटी परत पर फागुनी बयार एक ताजी दोहरी परत जमा गई थी।''[2]

'चौदह फेरे' में वर्णनात्मक शैली का बहुत सुन्दर उदाहरण देखने को मिलता है-

---

1- कृष्णकली- शिवानी- पृ- 47
2- कृष्णकली- शिवानी- पृ- 9

''ऊँचे नारियल और ताड़ के वृक्षों से घिरा 'नन्दी' अपने असंख्य गवाक्षों की जगमगाती बत्तियों से किसी जंगी जहाज़ सा लगता था। दुर से किसी भड़कीले होटल सा दिखता वह अनुपम उत्तुंग सौध, बंगाल के कुशल शिल्पियों की चतुर कला का उत्कृष्ट नमूना था। कलकत्ते में एक से एक भड़कीले प्रासाद है, दमकीली अट्टालिकाएँ हैं, किन्तु नन्दी का सौन्दर्य वास्तव में मौलिक था। सुना है किसी फ्रेंच इंजीनियर को मोटी रकम देकर कर्नल ने नन्दी का नक्शा बनवाया था। वह एक आलीशान अट्टालिका नहीं, हिन्दू कला के इतिहास के किसी सुवर्णयुग की जीवन्त झाँकी थी। कहीं पद दक्षिण के महाबलिपुरम के गुहाद्वार पर अंकित चित्रों की अनुकृतियाँ अंकित थी, पल्लव शैली के ऊँचे शिखरों को जावा और अन्नम के मंदिरों का रूप देकर, गगनचुम्बी मोहक मरोडों में मोड़ दिया गया था। दक्षिण की प्राचिन तक्षण शिल्पकला बंगाल के कुशल आधुनिक शिल्पियों की चतुर अंगुलियों में पुनः प्राणवान हो उठी थी।''[1]

6. सामसिक शैली –

समास उस शैली को कहते है जहाँ अनेक शब्दों के स्थान पर एक शब्द का प्रयोग भाषा में सामासिकता और सुगाढ़ता का निर्माण करता है। जैसे वीणापाणि, दशानन आदि शब्द प्रयोग एक वाक्य या वाक्य खण्ड को एक शब्द में सिमटाकर रख देते है। इस शैली से लेखक का भाषा पर कितना अधिकार है यह प्रमाणित होता है। 'कृष्णकली' उपन्यास में लेखिका ने कम शब्दों में पाण्डेजी के आधुनिक काल के व्यवसायिक चतुर व्यक्तित्व का वर्णन कुछ इस तरह किया है।

''वह बंगला उनकी कोठी से दूर इसी प्रयोजन से बनाया गया था।

1- चौदह फेरे - शिवानी - पृ-5

पांडेजी के एक से एक असामियों का अतिथिगृह उनका सवसे बड़ा आकर्षण था। राजनितिज, पत्रकार व्यवसायी अपनी वानप्रस्थ की अवस्था को ताक पर धर कर, यहाँ मनमानी रंगरेलियां मना सकते थे। उसी छोटे कमरे में सुरा-सुंदरी और विलासपूर्ण छप्पन प्रकार के तामसी भोज्य पदार्थो के अपूर्व तोहफे भेंट कर, कुटिल पांडेजी लाखो का वारा-न्यारा करते थे। न जाने कितने प्रोफ्यूमो उनकी मुट्ठी में बन्द रहते, जिससे जब चाहें पानी भरवा लें।''[1] यहाँ पर प्रोफ्यूमो वाली बात कहकर लेखिका ने बहुत-सी बातों का ब्योरा **कम शब्दों में दिया है।**

7. व्यास शैली –

व्यास शब्द का अर्थ ही होता है ''फैलाव'' या विस्तार। यह समास शैली की विलोमी शैली है।

''कृष्णकली'' उपन्यास में पन्ना का जो चरित्र-चित्रण किया गया है, उसमें लेखिका की व्यास शैली का स्पष्ट रूप से उल्लेख होता है।

''पन्ना के धने काले बालों में किसी प्रकार के छल-कपट की मरीचिका नहीं थी, न उसके चिकने चेहरे पर कोई झुर्री ही आयी थी, स्वच्छ दंत-पंक्ति में पान दोख्ते का एक धब्बा भी पन्ना ने नहीं लगने दिया था; दिन रात कत्थक्त नृत्य की कठोर घुरनियों ने, छिपछिपी गठन को इंच भर भी इधर-उधर नहीं होने दिया था, शांत चेहरे पर कलुषित पेशे के धुंधले हस्ताक्षर ढूँढने से भी नहीं मिलते थे। जैसे किसी सुखी गृहस्थी की जीवित विज्ञापन सी कोई लक्ष्मी-स्वरूपा गृहिणी ही उनके सम्मुख बैठी हो, ऐसा ही उसके अनन्य उपासकों को सर्वदा बोध होता। किसको विदेशी तीव्र मादक सुगन्ध रूचती है, किस संयमी को मोतियों की हल्की गमक पसंद है, कौन आमिष भोजी है, किसे वैष्णव

1- कृष्णकली- शिवानी- पृ-155

निरामिष भोजन पसंद है, कौन उसे भड़कीली साड़ी पर दमकते-चमकते पेशवाज में देकना चाहता है, और कौन उसकी लाल पाड़ की गरद की साड़ी-मंडिता भव्य मूर्ति का उपासक है, सब कुछ उसे स्मरण रहता।''[1] यहाँ पर पन्ना की एक-एक विशेषता का सूक्ष्म और ब्यौरेवार वर्णन लेखिका ने किया है।

8. प्रौढ़ या विदग्ध शैली –

जब कोई बात सीधे ढ़ंग से न कहकर विदग्ध-रीति या चातुर्य पूर्ण ढंग से कही जाती है तब विदग्ध-शैली का निर्माण होता है। इस शैली में लेखक आवश्यकतानुसार व्यास तथा समास शैली का अद्भुत सम्मिश्रण उपस्थित करता है। इस शैली में काव्यात्मकता, बहुश्रुतता, सांकेतिकता जैसे कई गुण पाये जाते है। शिवानी जी ने इस शैली का उपयोग अपने कई उपन्यासों में किया है या यों कहना चाहिए कि उन्हें इस शैली में कमाल की महारत हासिल थी।

'कृष्णकली' उपन्यास में जब प्रवीर कली की असमय मृत्यु पर उसके तर्पण के लिए संगम जाता है; उस समय का प्रसंग हमें इस शैली से परिचय करवाता है।

''दक्षिणाभिमुख हो उसने एक अंजलि भर कर मुक्तिदायी यावन अमृत उठा लिया। पर क्या कहकर छोड़ेगा यह जल? न उसका कुल था न गौत्र, हिन्दुशास्त्र तो उस पर जाने जाने वाले यात्री से भी कुल गौत्र का वीसा मांगता है। तब क्या यह जल, उस अनामा कुल-गौत्र की प्रेतयोनि तक नहीं पहुँचेगा? एक पल को उसे लगा जन्मजमन्तर के तृषार्त दो सूखे अधर उसकी जलभरी अंजलि से सट गये है। ललाट पर वैष्णवी त्रिपुण्ड, गले में तुलसी की माला, अर्धनग्न पीठ पर फैले काले केश। संगमतर की प्यासी अदर्शी वैष्णवी उसके पास

1- कृष्णकली- शिवानी- पृ-15

फिर आकर क्या खड़ी हो गयी थी?''[1]

कली प्रवीर को हमेशा से प्रेम करती रही है। उसके उसी प्रेम, उसकी स्मृति, उसकी चिर-तृषित प्यास सबका बहुत ही संक्षेप में विदग्धता के साथ वर्णन यहाँ हुआ है।

9. सरल-मधुर शैली -

जिस शैली में लेखक कोमल, मधुर, सरल, छोटे-छोटे शब्द और वाक्यों का प्रयोग करता है वहाँ सरल मधुर शैली का निर्माण होता है। शिवानी के 'माणिक' उपन्यास में इस शैली का बखुबी प्रयोग हुआ है-

''हरी-भरी वाटिका सहसा ऐसे उजड़ जाएगी, यह कभी किसीने सोचा भी नहीं था। दूर से ही जिसके पाटल-प्रसूनों की सुगंध राह चलते को भी मोहकर, पल भर को ठिठका देती थी, उसी की सूखी झाड़ियों के झंखाड़ पर धूल उड़ रही थी।''[2]

10. व्यंग्यात्मक शैली -

'व्यंग' शब्द वि + अंग से व्युत्पन्न हुआ है। जब कोई वस्तु अपने स्थान से विच्यूत हो जाती है, तब वह व्यंग का विषय बनती है। सामाजिक, धार्मिक, राजनितिक विसंगतियां, विषमताएं, विकृतियां ही व्यंग्य को जन्म देती है। जब समाज में भ्रष्टाचार और अन्याय बढ़ जाता है तब 'व्यंग' को हथियार के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। इस तरह की स्थितियां बहुत बढ़ गई है; अतः साहित्य में भी इस प्रवृत्ति को काफी प्रोत्साहन मिला है। शिवानी जी ने भी अपने उपन्यासों में कहीं-कहीं इस शैली का प्रयोग किया है। 'कृष्णकली' उपन्यास में दामोदर एक पुलिस ऑफिसर है और वह अपनी पदौन्नति प्राप्त करने के लिए

1- कृष्णकली- शिवानी- पृ- 227

2- माणिक- शिवानी- पृ- 9

क्या-क्या हठकण्डे अपनाता हैं इसका वर्ण' शिवानी ने किया है-

''दामोदर प्रसाद की उन दिनों और बन आयी थी। कुछ ही दिन पूर्व वह अपने अफसर के माता-पिता, सास-ससुर, सबको बद्रीनाथ-केदारनाथ घुमा ही नहीं लाया, उनके साथ प्रचुर मात्रा में शुद्ध घृत, शब्द और आठ ऐसे मोटे-मोटे पहाड़ी थुल्मे पहुँचा आया था; जिन्हें ओढ़कर साहब का पूरा परिवार कम से कम अट्ठाईस जाड़े काट सकता था। साहब उससे बहुत ही प्रसन्न होकर गये थे। एकान्त में उसे बुलाकर उन्होंने आश्वासन भी दिया था, ''अब तुम्हें इसी साल कहीं का बड़ा चार्ज देकर भेज देंगे। हमारी सास तुमसे बहुत खुश है।'' दामोदर मूंछों ही मूंछों में मुस्कारा कर कृतज्ञता से दोहरा हो गया था। वह चतुर अवसर जानता था कि प्रभु को प्रसन्न करने से पहले अब उनकी सास को प्रसन्न करना अधिक फलदायी है। उसकी पिछली पदोन्नति के लिए भी, उसे डी.आई.जी. की सास ने ही आशीर्वाद दिया था। जब कहीं बासमती का एक दाना भी ढूँढे नहीं मिल रहा था, तब वह हनुमान की ही भांति उड़ता पर्वत ही हथेली पर धर लाया था। बुढ़िया के चरणों में उसने चार मन ऐसी बासमती एक साथ उँडेल के रख दी कि जिसका एक-एक दाना शमातुलम्बुर की-सी सुगन्ध से साहब की पूरी कोठी सुवासित कर देता।''[1]

11. आंचलिक शैली -

शिवानी जी ने अपने उपन्यासों में प्रायः ही कुमाऊं अंचल का चित्रण किया है। अतः उनके उपन्यासों में ग्रामीण पात्र जो बोली बोलते है उसमें हमें आंचलिक्त शैली के दर्शन होते है।

एक उदाहरण है शिवानी के उपन्यास 'चौदह फेरे' में से जब नन्दी अपने पति के घर आती है उस समय वह अपनी ग्रामीण भाषा में ही वार्तािवलाप करती

1- कृष्णकली-शिवानी- पृ- 87-88

है। ''मैं इन चीनी के बर्तनों में चाय-शाय नहीं पीवे हूँ; बिटिया दूध पी लेगी और चीजें उठा लो।....... नहीं हम सब खायेंगे.......महाराज चला गया तो, तो उसने अहल्या को डपटकर कहा-''कंगली छोकरी जैसे कभी कुछ खया ही नही है, सबके सामने इज्ज़त उतार लेवे ह, ऐ छोरी, ऐ मरी; कैसी भकोस रही है, अभी-अभी तो भैया ने दालमोट ले दी हैगी।''[1]...

12. आलंकारिक शैली –

शिवानी जी के उपन्यासों को पढ़ने के बाद काव्य का सा आनंद प्राप्त होता है। शायद इसकी वजह यह है कि उनकी गद्य शैली में नये विशेषण, नये रूपक, नये उपमान इत्यादि के दर्शन हमें पग-पग पर होते रहते है।

शिवानी के विषकन्या उपन्यास में कुछ इसी तरह का वर्णन हमें दिखाई देता है-

''आज उसी कोने में एक रंग-बिरंगा जामनगरी हिंडोला धरा था, जिस पर पड़ा डनलप का मोटा गावतकिया अतिथि को स्वयं ही बैठने का भुक आमंत्रण दे रहा था। कमरे की अनूठी सज्ञा स्वामिनी के सौन्दर्य से टक्कर ले रही थी। सिंहासन-सी मखमली गद्दीदार ऐसी ऊंची-ऊंची कुर्सियाँ थी, जिन पर बैठकर कभी भारत के वायसशय चित्र खिंचवाया करते थे। एक गुदगुदा कालीन अंतहीन क्षितिज-सा पूरे कमरे के क्षेत्रफल को बड़े अंदाज से नापता दूर तक बिछता चला गया था। हवा से हिल रहे भारी पर्दों की नन्हीं घंटियों की रूनुक-झुनुक से टकराती मेरी दृष्टि सरसराकर किसी अबाध्य वन्य शाखामृगी-सी ही कमरे के बीचोंबीच टँगे झाड़-फानूस पर चढ़ती, संगमरमरी मेज पर धरे एक हरे इत्रदान पर उतर आई। ओह, तो कमरे के अटपटे मर्दीले सौरभ का केन्द्रबिन्दु

1- चौदह फेरे- शिवानी - पृ- 13

यही था।....

......मुझे लगा कि बड़े यत्न से खींची गई मेरे गाम्भीर्य की लक्ष्मण रेखा को अपनी रतनारी एड़ियों से रौंदती वह एक बार फिर मेरे अंतरंग कक्ष में मुस्कराती खड़ी हो गई है।''[1]

13. <u>संस्कृत-परिनिष्ठित शैली</u> -

संस्कृत के शब्द प्रचुर मात्रा में उनकी भाषा के साथ सम्पृक्त हैं। शिवानी जी ने अपने उपन्यासों में वई स्थानों पर सामान्य प्रचलित शब्दों को छोड़कर संस्कृत के पर्यायों का प्रयोग किया है।

जैसे घृत(घी), प्रतिवेशिनी (पड़ोसी), दस्यु-कन्या, भृत्यगण आदि ऐसे ही शब्द हैं।

'कालिन्दी' उपन्यास की कालिन्दी के नाना कुमाऊं के प्रसिद्ध ज्योतिष-शास्त्री है; अतः इस उपन्यास में शिवानी ने संस्कृत-परिनिष्टित शैली का प्रयोग अनेक स्थानों पर किया है।

''कालिन्दी की वर्तुलाकार घुमेरों में लिपटी जन्कुंडली अन्ना के सामने खुली धरी थी-श्री गणेशाय नमः- आदित्यादि ग्रहा सर्वे नक्षत्राणि चराशयः सर्वान्कामान प्रयच्छन्तु यस्यैषां जन्मपत्रिका, श्रीमन् विक्रमार्क राज्य समयातीत श्री शालिवाहन शके, उत्तरायणे, शिशिर शतौ, मासोत्तम मासे पौषमासे शुक्ले पक्षे दशम्यां बुधवासरे, सिंहलग्नोदये श्री कमलावल्लभ पंत महोदयनाम् गृहे भार्यो मयकुलानंद दायिनी कमला, कुंती, कालिन्दी नाम्नी कन्यारत्नम् जीन अल्मोड़ा नगरे आक्षांशा..... तब अल्मोड़े में दो प्रख्यात गणक माने जाते थे। पंडित मोतीराम पांडे और पंडित रूद्रदत्त भट्ट, उनकी बनाई जन्म कुंडली का उन दिनों

1- विषकन्या- शिवानी- पृ- 13

प्रचुर पारिश्रमिक भी देना होता था,

...अन्पूर्णा कब की, अपनी कुंडली अपने पिता के अस्थिकलश के साथ कनखल में प्रवाहित कर चुकी थी, किन्तु वह पंक्ति अभी भी उसे ज्यों का त्यों याद भी-दैवज मार्तण्ड की पुत्री थी, ऐसी पंक्तियों का मर्म तो समझती ही थी।''[1]

1. कालिन्दी - शिवानी- पृ- 15-16

संदर्भ

1. साहित्यालोचन (12 वाँ संस्करण)- डॉ.श्यामसुन्दरदास -पृ-231
2. साहित्य के उद्वेश्य- मुंशी प्रेमचन्द- पृ-2
3. उत्तर कथा (भाग दो) का आमुख-नरेश मेहता
4. एक थी रामरती- शिवानी-पृ-72
5. भाषा विज्ञान-भोलानाथ तिवारी-पृ.5
6. आलोचना का इतिहास-डॉ. एस पी खत्री एव शित्रदान सिंह चौहान- पृ.-63
7. हिन्दी-उपन्यास कला-डॉ. राम लखन शुक्ल-पृ-51
8. जालक-शिवानी-पृ-121
9. कृष्णकली-शिवानी-पृ.6
10. काव्यालंकार सूत्र- आचार्य वामन- 21217-8
11. द प्राब्लम आफ स्टाईल- जे मिडल्टन मुरे- पृ-8
12. हिन्दी उपन्यास में कथा शिल्प का विकास- डॉ. प्रतापनारायण टण्डन-पृ-100
13. काव्यों में शैली और कौशल-आचार्य सीताराम चतुर्वेदी-पृ-323
14. हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद -डॉ. त्रिभुवन सिंह- पृ. 666-667
15. कृष्णकली-शिवानी-पृ-59
16. श्मशान चम्पा-शिवानी-पृ-39
17. चौदहफेरे-शिवानी -पृ-114
18. अतिथि - शिवानी- पृ-10
19. उपप्रेती -शिवानी- पृ-16
20. रतिविलाप-शिवानी- पृ-10
21. उपप्रेती -शिवानी- पृ-27
22. विषकन्या -शिवानी- पृ-18
23. मायापुरी-शिवानी- पृ-100
24. कृष्णकली -शिवानी- पृ-115
25. कृष्णवेणी -शिवानी- पृ-38
26. कृष्णकली -शिवानी- पृ-49

27. कृष्णकली - शिवानी- पृ-206-208
28. स्वयं सिद्धा- शिवानी -पृ-10
29. स्वयं सिद्धा- शिवानी -पृ-13
30. स्वयं सिद्धा- शिवानी -पृ-29
31. रथ्या- शिवानी- पृ-21
32. कृष्णकली- शिवानी पृ-47
33. कृष्णकली- शिवानी पृ-9
34. चौदह फेरे - शिवानी-पृ-5
35. कृष्णकली-शिवानी - पृ-155
36. कृष्णकली-शिवानी - पृ-15
37. कृष्णकली-शिवानी - पृ-227
38. माणिक -शिवानी-पृ-9
39. कृष्णकली-शिवानी- पृ-87-88
40. चौदह फेरे- शिवानी- पृ-13
41. विषकन्या-शिवानी - पृ-13
42. कालिन्दी-शिवानी - पृ-15-16